17 अक्टूबर 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 14 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (द्वितीय), 2018 (वीर नि.संवत्-2544) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

21वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 5 से 12 अक्टूबर तक जिनागम के 22 विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाला 21वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह – दिनांक 5 अक्टूबर को शिविर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित सभा में मुख्य अतिथि के रूप में श्री एन.के. सेठी जयपुर उपस्थित थे। विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

शिविर का उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटा, ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, मंच उद्घाटन श्री अखिलजी जैन (U.S.A.) इन्दौर द्वारा संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री ताराचंदजी अशोकजी जैन सौगानी जयपुर एवं गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री कैलाशचंदजी प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर थे। आगन्तुक विद्वानों व महानुभावों का डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा तिलक लगाकर एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा माल्यार्पणकर स्वागत किया गया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि यहाँ जयपुर, कोटा, बांसवाड़ा, भोपाल एवं उदयपुर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को जैन तत्त्वज्ञान, न्यायशास्त्र व करणानुयोग के गहन विषयों के साथ-साथ आध्यात्मिक विषयों का विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा गंभीर अध्ययन कराया जायेगा।

इस अवसर पर श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री निहालचंदजी जैन जयपुर, श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर आदि महानुभावों ने भी सभा को संबोधित किया। सभा का संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन प्रातःकाल पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'दर्शन-सूत्र-चारित्र-बोध एवं भाव पाहुड की जयमाला' पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 'सात तत्त्व' विषय पर हुये प्रवचनों के पूर्व डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई के व्याख्यानों का लाभ मिला।

पूजन विधान – प्रातःकाल नित्य-नियम पूजन के साथ-साथ श्री दर्शन-सूत्र-चारित्र-बोध-भाव पाहुड विधान एवं सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र-भक्ति का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी व अनेकान्तजी शास्त्री द्वारा महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से संपन्न हुये। विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुलेखा-दिनेशजी शाह जयपुर, श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल-टोडरमल स्मारक बापूनगर जयपुर, श्रीमती लीलादेवी प्रेमचंदजी जैन 'एडवोकेट' दौसा, श्री वीरेशजी सम्यक्जी कासलीवाल सूरत थे।

शिक्षण कक्षायें – ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सामान्य श्रावकाचार, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार (सुखाधिकार) व मोक्षमार्गप्रकाशक (उभयाभासी मिथ्यादृष्टि), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा परोक्ष प्रमाण के भेद-प्रभेद व समयसार में विविध सम्बन्ध, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रमाणाभास व क्रमबद्धपर्याय, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज द्वारा परीक्षामुख व आप्तपरीक्षा (ईश्वरकर्तृत्वनिषेध), डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली द्वारा आगम का स्वरूप व जैन न्याय का सामान्य परिचय, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयचक्र व कालचक्र, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक (नौवां अध्याय) व सर्वार्थसिद्धि, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा भक्तामर स्तोत्र व मुक्ति का मार्ग, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा चौथा-पांचवां गुणस्थान व उपयोग का स्वरूप/भेद-प्रभेद, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर द्वारा निमित्त-उपादान विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला।

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

सम्पादकीय –

18

ऐसे क्या पाप किये?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

भक्ति एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, इसके तीन बिन्दु होते हैं – भक्त, भगवान और भक्ति। इसमें भक्त और भगवान के बीच संबंध जोड़नेवाले प्रशस्त राग की मुख्यता रहती है। जब भक्त अपने आराध्य वीतरागीदेव के यथार्थ स्वरूप को जानता है, पहचानता है तो उसके हृदय में उनके प्रति सहज अनुराग उत्पन्न होता है। इस प्रशस्त गुणानुराग को ही भक्ति कहते हैं।

उस भक्ति में लौकिक स्वार्थसिद्धि की गन्ध नहीं होती, किसी फल की आशा नहीं होती और भयकृत भीरुता भी नहीं होती।

भय, आशा और स्नेह व लोभ से या लौकिक कार्यों की पूर्ति के लिए की गई भगवद्भक्ति तो अप्रशस्त राग होने से पापभाव ही है, उसका नाम भक्ति नहीं है।

गृहीत मिथ्यादृष्टि जीवों के द्वारा लौकिक कार्यों की पूर्ति के लिए की गई भगवद्भक्ति तो अप्रशस्त राग होने से पापभाव ही है, उसका नाम भक्ति नहीं है।

यद्यपि गृहीत मिथ्यादृष्टि जीव, जो लौकिक कार्यों की सिद्धि हेतु कुदेवादि की उपासना करते हैं, उनके कुदेवादि की उपासनारूप अज्ञान एवं गृहीत मिथ्यात्व छुड़ाने के प्रयोजन से प्रथमानुयोग में या इसी शैली के अन्य शास्त्रों में इसप्रकार की भक्ति की भी कदाचित् सराहना हो सकती है, किन्तु उसकी आड़ में हमें अपने अज्ञान की सुरक्षा करना योग्य नहीं है।

अत: नि:स्वार्थभाव से किया गया धर्म व धर्मायतनों के प्रति प्रशस्त एवं विशिष्ट अनुराग ही यथार्थ भक्ति की कोटि में गिना जा सकता है।

आगम में भी इस बात की पुष्टि में अनेक उल्लेख मिलते हैं, उनमें से कुछ प्रसिद्ध आचार्यों ने उल्लेख प्रमाणस्वरूप यहाँ प्रस्तुत करते हैं –

(१) अरहन्त, आचार्य, उपाध्याय आदि बहुश्रुत संतों में और जिनवाणी में भावों की विशुद्धिपूर्वक जो प्रशस्त अनुराग होता है, उसे भक्ति कहते हैं।[१]

१. ''अर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनेषु भावविशुद्धियुक्तोऽनुराग: भक्ति।'' सर्वार्थसिद्धि ६/२४/२३९

(२) अर्हदादि के गुणों में प्रेम करना भक्ति है।[२]

(३) जो जीव मोक्षगत पुरुषों का गुण-भेद जानकर उनकी भी परमभक्ति करता है, उस जीव की भक्ति को व्यवहारनय से निर्वाण भक्ति कही है।[३]

(४) व्यवहार से सराग सम्यग्दृष्टियों के पंचपरमेष्ठी की आराधनारूप सम्यक् भक्ति होती है।[४]

(५) ''निज परमात्मतत्त्व के सम्यक्श्रद्धान-अवबोध-आचरणरूप शुद्ध रत्नत्रयपरिणामों का जो भजन है, वह भक्ति है। आराधन – ऐसा उसका अर्थ है। एकादशपदी श्रावक (क्षुल्लक ऐरावत) शुद्धरत्नत्रय की भक्ति करते हैं।''[५]

(६) निश्चयनय से वीतराग सम्यग्दृष्टियों के शुद्ध आत्मतत्त्व की भावनारूप भक्ति होती है।[६]

यद्यपि जिनेन्द्र भगवान का भक्त यह जानता है कि उसके इष्टदेव अरहन्तभगवान परमवीतरागी है, अत: वे किसी का कुछ भी भला-बुरा नहीं करते, न किसी से कुछ लेते-देते हैं।

वस्तु-स्वातन्त्र्य के सिद्धान्त में एवं कर्म-सिद्धान्त में भी किसी अन्य के भला-बुरा करने की व्यवस्था नहीं है; तथापि व्यवहारभक्ति में वीतरागी भगवान को भी सुख-दु:ख का कर्ता-हर्ता कहने का व्यवहार है। (क्रमश:)

२. अर्हदादिगुणानुरागो भक्ति: – भगवती आराधना वि. ४७/१५९
३. ''मोक्खगयं पुरिसाणं गुणभेद जाणिऊण तेसिं पि''... नियमसार गाथा १३५
४. ''भक्ति पुन: सम्पक्त भण्यते व्यवहारेण सराग सम्यग्दृष्टिनां पंचपरमेष्ठिचाराधनारूपा।'' – समयसार, तात्पर्यवृत्ति टीका १७३/१७६/ २४३
५. ''निजपरमात्मतत्त्वसम्यक्श्रद्धानावबोधाचरणात्मकेषु शुद्धरत्नत्रय-परिणामेषु भाजनं भक्तिराराधनेत्यर्थ:। एकादशपदेषु श्रावकेषु सर्वे शुद्धरत्नत्रयभक्ति कुर्वन्ति।'' – नियमसार तात्पर्यवृत्ति, पृष्ठ १३४
६. वीतरागसम्यग्दृष्टिनां शुद्धात्मतत्त्वभावनारूपा चेति। – समयसार तात्पर्यवृत्ति, १७३/१७६/२४३

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 से 21 अक्टू.	पोन्नूर	तमिलनाडु तीर्थयात्रा
31 अक्टूबर	मुम्बई	शिखरजी यात्रा कार्यक्रम
4 से 8 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
30 नव. से 2 दिस.	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
7 से 12 दिसम्बर	अहमदाबाद	पंचकल्याणक
19 से 24 दिसम्बर	गौरझामर	पंचकल्याणक
26 दिस.से 1 जन.2019	जयपुर	विदेशियों हेतु शिविर
16 से 21 जनवरी 2019	हेरले	पंचकल्याणक

दशलक्षण पर्व के अवसर पर –

अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ 'पाठशाला खोलो अभियान'

वर्ष 2018 के दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा देशभर में **'पाठशाला खोलो अभियान'** का संचालन किया गया। इस क्रम में दशलक्षण पर्व पर जाने वाले विद्वान से यह आग्रह किया गया था कि वे अपने-अपने स्थान पर 10 दिन प्रवचनों के साथ-साथ वहाँ चलने वाली पाठशाला को सक्रिय करें, यदि नहीं चलती है तो उसकी उपयोगिता बताकर उसकी स्थापना करावें।

इसके अतिरिक्त जयपुर के 2-2 युवा विद्वानों की 12 टीमें देशभर में 116 स्थानों पर गई; उनके प्रयासों से 43 स्थानों पर नवीन पाठशालाओं का संचालन प्रारम्भ हुआ और 62 स्थानों पर चल रही पाठशालाओं में जागृति आयी।

इस पूरे अभियान का संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के निर्देशन में किया गया। इसमें पण्डित नीशूजी शास्त्री, जिनकुमारजी शास्त्री एवं अनेकान्तजी शास्त्री का उल्लेखनीय योगदान रहा।

अभियान का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है –

उदयपुर संभाग में पल त्रिवेदी व अर्पित जैन की पहली टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें उदयपुर देवाली, उदयपुर डबोक, भिण्डर, लूणदा, वल्लभनगर में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा उदयपुर मुमुक्षु मण्डल, सेक्टर-11, नेमिनगर, गायरियावास की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

जबलपुर संभाग में आयुष जैन जबलपुर व प्रियांश जैन दिल्ली की दूसरी टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें खड़ैरी (बड़ा मंदिर), खड़ैरी (तारण-तरण), फुटेरा, गढाकोटा में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा जबलपुर, रांझी, जबेरा, गौरझामर की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

इन्दौर संभाग में प्रजल जैन व सम्यक् जैन की तीसरी टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें जावरा में नवीन पाठशाला खोली गई तथा मंदसौर (गोलबाजार), उज्जैन, इन्दौर (रामचन्द्रनगर, साधना नगर, ओम विहार, रामाशा मन्दिर, स्वाध्याय मन्दिर) की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

अशोकनगर संभाग में अक्षत जैन व अचिंत्य जैन की चौथी टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें कोलारस-चौधरी में नवीन पाठशाला खोली गई तथा अशोकनगर, आरोन, राघौगढ, गुना (वीतराग भवन), गुना (महावीर), लुकवासा, कोलारस (आदिनाथ जिनालय), ललितपुर की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

पुणे व सोलापुर संभाग में श्रेणिक लट्ठे व भरमप्पा जैन की पांचवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें बालचंद नगर, महुड, कुर्रुडवाडी, सोलापुर, आलते में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा पुणे, नातेपुते, अकलूज, पंढरपुर, सांगली की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

नागपुर संभाग में अनिकेत जैन व आयुष जैन की छठवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें उभेगांव, सिवनी, करेली, भोपाल (कोहेफिजा), विदिशा (होमगार्ड), विदिशा (स्टेशन), बेगमगंज में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा नागपुर (इतवारी, इम्प्रेस सिटी), सिंगोली, छिन्दवाड़ा (गोलगंज, गांधीगंज), भोपाल (चौक) की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

ग्वालियर संभाग में अनिकेत जैन व आयुष जैन की सातवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें ग्वालियर (सोढाकुंआ, मुरार, लाला बाजार, फालका बाजार, विनय नगर), मालनपुर, मौ में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा अमायन, भिण्ड (देवनगर, परमागम मन्दिर) की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

कोटा संभाग में चेतनप्रकाश जैन व सचिन जैन की आठवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें रावतभाटा में नवीन पाठशाला खोली गई तथा कोटा (इन्द्रविहार, छावनी), सिंगोली, पिड़ावा, झालरापाटन की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

उ.प्र. संभाग में निखिल जैन व साहिल जैन की नौवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें खतौली, सहारनपुर, आगरा, जैतपुर कलां, मैनपुरी, करहल में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा खेकड़ा, मेरठ तीरगरान, फिरोजाबाद की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

महाराष्ट्र संभाग में शैलेष बेलोकर व अभिषेक जैन की दसवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें फालेगांव, सेनगांव, डासाला, हिंगोली, वारूद में नवीन पाठशालाएं खोली गई तथा चिखली, सेलू की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

सागर संभाग में देवांश शेठ व संयम जैन की ग्यारहवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें टीकमगढ, शाहगढ, अमरमऊ, बण्डा, सागर (मकरोनिया, परकोटा, बालकव्यू), हीरापुर, तिगोड़ा की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

अजमेर संभाग में संयम जैन व आयुष जैन की बारहवीं टीम पाठशाला खोलो अभियान के संचालन हेतु गयी, जिसमें किशनगढ, शाहपुरा की पाठशालाओं में सक्रियता आयी।

इसप्रकार देशभर में अनेक नयी पाठशालाएं खुली एवं पुरानी पाठशालाओं का पुनर्गठन हुआ। इसके अतिरिक्त 25-30 अन्य स्थानों पर भी पाठशालाओं का नवीन संचालन/पुनर्गठन किया गया, जिसके समाचार आगामी अंक में दिये जायेंगे। ●

सर्वोदय अहिंसा अभियान

पटाखे आखिर क्यों?

इस दीपावली पर करें खुद की सुरक्षा एवं

औरों के साथ-साथ जीव-जन्तुओं की रक्षा

नौ वर्षों से चले आ रहे इस अभियान में हमसे कई लोग जुड़े और जुड़ते जा रहे हैं, प्रेरणा ले रहे हैं, प्रेरणा दे रहे हैं। आप भी इस पवित्र अभियान का हिस्सा **अवश्य बनें।**

प्रेरणा लें भी और दें भी..

सम्पर्क : संजय शास्त्री (संयोजक)
B-180, A-2, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर-15
मोबाइल : 09785 999100
Sarvodayaahimsa

: आयोजक :
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

: प्रायोजक :
श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

निवेदक
अजितप्रसाद जैन - वैभव जैन
श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट
राजपुर रोड, दिल्ली

10 साल : बेमिसाल

On Line Poster Making Compitition
First Prize :YASH BAID Class-V

हम तो पशु-पक्षी होकर भी मनोरंजन के लिए किसी भी प्राणी को नहीं मारते।

और आप?

पोस्टर मँगायें एवं अभियान के फोटो/समाचार भेजें 97859-99100

अनुरोध : पत्रिका को जहाँ सभी पढ़ सकें, ऐसे स्थान पर प्रदर्शन हेतु अवश्य लगावें.

वर्ष-41 अंक-14, 17 अक्टूबर 2018

डॉक्टर्स ही नहीं खुद जांच करने वाली लैब और पटाखा व्यापारी चौंके, कहा ये खतरनाक

लैब में साबितः पटाखों में सीसा और पारा

दैनिक भास्कर
सुरक्षित दीपावली

देश में पहली बार
- चार श्रेणियों में पटाखों की वैज्ञानिक जांच
- रिपोर्ट पर देश के जाने-माने डॉक्टर्स की राय

त्योहारों की रौनक पटाखों और रोशनी के बिना संभव ही नहीं है। लेकिन ये हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए खतरनाक भी हैं। इनका इस्तेमाल एक सीमा तक ही सही है। इसीलिए हमने वैज्ञानिक तरह से चार स्पेसिफिक श्रेणियों के पटाखों की जांच कराई। रिपोर्ट में पता चला कि इसमें सीसा और पारा जैसे खतरनाक तत्व बड़ी मात्रा में मिले हुए हैं, जो 10-10 साल तक शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रिपोर्ट को हमने डॉक्टर्स से साझा किया ताकि आपको इसके खतरे स्पष्ट पता चल सकें। इसी खतरे को जानने में आपकी मदद करती ये विशेष रिपोर्ट।

हर श्रेणी के पटाखों को खास बनाने के लिए मिलाते हैं अलग तत्व और रसायन

धमाके वालेः प्रेशर के लिए भरते हैं गन पाउडर की गोली

- *रस्सी बम में 0.74 फीसदी सल्फर और 0.73 फीसदी कार्बन मिला। दूसरे वाइस टेस्ट में आवाज अधिकतम 117 डेसिबल मिली।*

- ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. संगीता वर्ती के अनुसार तेज आवाज के पटाखों से बचें। क्योंकि सामान्यतौर पर व्यक्ति 85 डेसिबल तक की आवाज सुन सकता है। हर तीन डेसिबल के बाद खतरे बढ़ते जाते हैं।

सीमा : ऐसे पटाखे चलाते समय कम से कम 6 मीटर की दूरी बनाए रखें।

संख्या : ऐसे पटाखे एक साथ न छोड़ें। आवाज खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है।

रोशनी वालेः हर रंग के लिए अलग-अलग सॉल्ट

- *फुलझड़ी में पारा 14.21 पीपीएम (प्रति 10 लाख ग्राम) मिला। सीसा 16.30 पीपीएम मिला।*
- पारा हमारे पाचन तंत्र को कमजोर करता है। सीसा बच्चों के नर्वस सिस्टम और किडनी को नुकसान पहुंचाता है।

- चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. आशोक महाशूर कहते हैं कि 6 साल से कम के बच्चे और फेफड़ों के मरीजों के लिए पारा और सीसा दोनों घातक हैं।

पारा मेडिकल उपकरणों में भी इस्तेमाल नहीं होता।

सीमा : फेफड़ों के मरीज आतिशबाजी से दूर रहें। बच्चे फुलझड़ी आदि ही चलाएं।

संख्या : रोशनी वाले 5 से 10 पटाखे ही काफी हैं क्योंकि ये खतरनाक हैं।

उड़ने वालेः हल्की फ्लूगैस उड़ाती है रॉकेट

- *12 रंगों में फूटने वाले रॉकेट में कार्बन 32.68 फीसदी मिला। इसमें सीसा और पारा पाया गया।*
- दिवाली के ही दौरान अलग-अलग प्रदूषक तत्व करीब डेढ़ से आठ गुना तक ज्यादा हो जाते हैं वायुमंडल में।

- हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ.आरआर कासलीवाल के अनुसार रॉकेट के प्रदूषण से कैंसर, अस्थमा, मिर्गी जैसे रोग हो सकते हैं।

कार्बन वाले पटाखों से खांसी का दौरा आ सकता है।

सीमा : हाईब्लडप्रेशर, अस्थमा आदि के मरीज एक भी मिनट ऐसे पटाखों के बीच न रहें।

संख्या : बच्चों को दिखाने के लिए खुद रॉकेट छोड़ें। 5-6 रॉकेट काफी हैं।

घूमने वालेः नली से फ्लूगैस निकलती है तो घूमती है

- *चकरी में 100 ग्राम में 0.73 फीसदी सल्फर और 8 फीसदी कार्बन पाया गया। जो खतरनाक है।*

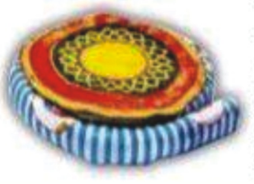

- डॉ. एसके गुप्ता बताते हैं कि सल्फर और कार्बन दोनों दिल और फेफड़ों के लिए बेहद खतरनाक है। इससे निकलने वाला धुंआ बीमारी की जड़ है। चकरी को बच्चों को दिखाने के चक्कर में घर में तो बिल्कुल न जलाएं।

सीमा : इसे ऐसी जगह ही जलाएं जहां पर खुली हवा हो। ताकि धुंआ निकल सके।

संख्या : बच्चों के ज्यादा जिद करने पर भी कम से कम चलाएं।

साभार दैनिक भास्कर नागपुर • 1 नवंबर, 2015

जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक)

चीनी पटाखों में ज्यादा पोटेशियम

चीनी पटाखों में पोटेशियम क्लोरेट की मात्रा ज्यादा होती है, ये तेजी से जलते हैं और रोशनी भी ज्यादा निकलती है। इसलिए ये आंखों और फेफड़ों के लिए ज्यादा खतरनाक हैं।

बच्चों को 11% अधिक खतरा

एक्सपर्ट्स के अनुसार बच्चों के पटाखों से होने वाली दुर्घटनाओं के शिकार होने की आशंका 11 फीसदी तक ज्यादा होती है। उन्हें बड़ों के पटाखों से हमेशा दूर रखें।

रिसर्च- शादाब समी

SAY NO TO CRACKERS

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

पोस्टर मँगायें एवं अभियान के फोटो/समाचार भेजें

संयोजक : संजय शास्त्री, जयपुर 97859-99100

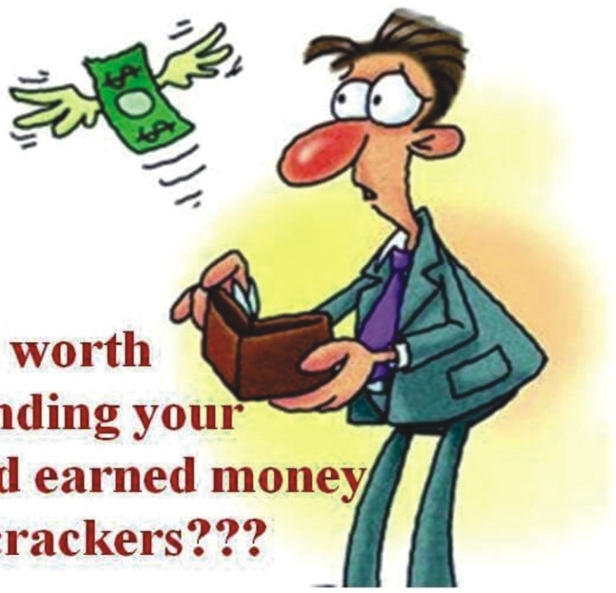

अभियान के प्रमुख सहयोगी

प्रेमचन्द बजाज

श्रीमती सुनीता बजाज

संस्थापक-संचालक

मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

कृपया इसे पढ़ कर जहाँ सभी पढ़ सकें – ऐसे स्थान पर लगा देवें।

शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में 21वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में दिनांक 12 अक्टूबर की रात्रि में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में श्री महेन्द्रजी गंगवाल, श्री कैलाशचंदजी सेठी तथा ब्र. सुमतप्रकाशजी सहित समस्त विद्वत्गण व अध्यापकगण उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् सफल विद्यार्थियों को नकद राशि एवं प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने दीक्षान्त भाषण में कहा कि सभी विद्यालयों के छात्र एक हैं, सभी को मिलकर तत्त्वज्ञान सीखना व प्रचार-प्रसार करना है। पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत हुये शिविर में सहयोग करने वाले सभी विद्वानों एवं अध्यापकों का आभार व्यक्त किया। पांचों महाविद्यालयों के (जयपुर=185, बांसवाड़ा=51, कोटा=44, भोपाल=18, उदयपुर=20) कुल 318 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें विशेष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र इसप्रकार हैं -

उपाध्याय वर्ग में जयपुर से अक्षत नाके निम्बाहेड़ा ने प्रथम व संयम पुजारी खनियांधाना ने द्वितीय स्थान, **कोटा** से पीयूष जैन खड़ैरी ने प्रथम व हिमेश जैन शाहगढ ने द्वितीय स्थान, **भोपाल** से नवीन जैन बैंसा ने प्रथम व पीयूष जैन गैरतगंज ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शास्त्री प्रथम वर्ष में जयपुर से पवित्र जैन आगरा ने प्रथम व आप्त अनुशीलन जैन दमोह ने द्वितीय स्थान, **कोटा** से विपिन जैन किशनपुरा ने प्रथम व प्रभात जैन घुवारा ने द्वितीय स्थान, **बांसवाड़ा** से संदीप जैन मौ ने प्रथम व सुशांत चौगुले पंढरपुर ने द्वितीय स्थान, **उदयपुर** से समयसत्य प्रधान केरवना ने प्रथम व प्रांजल जैन बानपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शास्त्री द्वितीय-तृतीय वर्ष में जयपुर से दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने प्रथम व प्रतीक जैन विदिशा ने द्वितीय स्थान, **कोटा** से अंशुल जैन मुंगावली ने प्रथम व विवेक जैन बण्डा ने द्वितीय स्थान, **बांसवाड़ा** से भूषण कालेगोरे केज ने प्रथम व जीवेश जैन पिड़ावा ने द्वितीय स्थान, **उदयपुर** से प्रियंका जैन गुना ने प्रथम व शाविका जैन चित्तौड़गढ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण रजत जैन कापरेन एवं संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

हजारों लोगों ने देखी और सराही टोडरमल स्मारक की गौरवगाथा -

समय की ओर

दशलक्षण पर्व के अवसर पर अनंत चतुर्दशी के दिन अरिहंत चैनल पर दोपहर 2.30 बजे से 3.40 बजे तक टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की डॉक्यूमेन्ट्री 'समय की ओर' का प्रसारण किया गया, जिसे देश/विदेश में हजारों लोगों ने देखा।

- अनेक स्थानों पर यह मंदिरों में सामूहिक रूप से टी.वी./प्रोजेक्टर पर चलाई गई।

- इसमें अनेक लोग ऐसे थे, जिन्होंने पहली बार इस डॉक्यूमेन्ट्री को देखा। अनेक लोगों ने टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की बहुआयामी गतिविधियों का इतनी गहराई से रोचक तरीके से पहली बार परिचय प्राप्त किया। यह डॉक्यूमेन्ट्री टोडरमल स्मारक के यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध है, जिसे देखने के लिये **https://youtu.be/zU01cwc8mNk** लिंक पर जाएं।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रात: 5.30 बजे पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा की प्रौढ कक्षाके पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ.भारिल्ल एवं अरहंत चैनल पर गुरुदेवश्री के प्रवचनों का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी कोलकाता, श्रीमती शशि-सुरेशचंद जैन शिवपुरी, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा थे।

शिविर में 16 विद्वानों के माध्यम से लगभग 500 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। इस अवसर पर हजारों घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com